International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 5.681
Vol.5 No.3 Jan –Feb 2018

भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक मूल्य

डॉ.खंदारे चंदू लक्ष्मण
हिंदी विभाग गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय

समाज और साहित्य का संस्कृति के साथ बड़ा घनिष्ठ संबध है | संस्कृति तथा साहित्य दोनों का विकास समाज के अंतर्गत होता है| समाज से अलग हटकर साहित्य और मूल्यों की कल्पना करना निर्थक है | साहित्य में समाज के साथ-साथ संस्कृति की झलक भी हमें दिखाई देती है | वस्तुत: साहित्य और संस्कृति तथा समाज मिलकर एक त्रिकोण बनता है|

संस्कृति का जन्म समाज से हुआ है,इसलिए उसे समाज की उपज कहा जाता है| यह समाज की आत्मा एवं उसका व्यक्तित्व है| संस्कृति का विकास समाज पर निर्भर रहता है| संस्कृति एक ऐसी चीज है जो समाज को खण्डित होने से बचाती है| यदि सांस्कृतिक मूल्य न रहे तो समाज भी नहीं रह सकता |समाज और संस्कृति का सम्बन्ध गहरा है| एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व नहीं है | संस्कृति का आधार समाज है ,तो समाज को सुचारू रूप से संचालित करनेवाली पद्धति संस्कृति है| सांस्कृतिक मूल्य ही समाज तथा उसके व्यक्तियों के मन से हिंसात्मक भावों को निकालकर उनकी जगह प्रेम,सद्भाव,अहिंसा आदि भावों को बिठाती है| जिससे समाज में एकता रहती है |

साहित्य और संस्कृति का भी एक दूसरे के साथ परस्पर संबध है |संस्कृति समाज की आत्मा है और साहित्य समाज का ह्रदय है| साहित्य किसी भी संस्कृति का वाहक होता है| संस्कृति के सभी अंगों को साहित्य द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है | हिंदी के अनेक विद्वानों ने संस्कृति शब्द का अर्थ मानव-मूल्यों ,विचारों एवं संस्कारों के रूप में प्रस्तुत किया है |संस्कृति के चार अध्याय में दिनकरजी ने संस्कृति की परिभाषा इस प्रकार दी है –"संस्कृति जीवन का एक तरीका है और वह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है, जिसमें हम जन्म लेते हैं| संस्कृति सभ्यता की उपेक्षा महीन चीज है| वह सभ्यता के भीतर उसी तरह व्याप्त है, जैसे दूध में मखन या फूलों में सुगंध | यह मन, आचार अथवा रुचियों की परिस्कृति या शुधि है |यह सभ्यता का भीतर से प्रकाशित हो उठाना है | सृसठी की उदात्त – परिस्कृत भावनाओं, परिकल्पनाओं और समग्र मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति ही संस्कृति हैi |"

इसी तरह हिंदी के अनेक विद्वानों ने 'संस्कृति' शब्द का अर्थ मानव-मूल्यों, विचारों एवं संस्कारों के रूप में प्रुस्तुत किया है | शिवकुमार श्रीवास्तव कहते है –"संस्कृति शताब्दियों के सोच-विचार, आचार-व्यवहार का प्रतिफलन होती है | संस्कृति का पर्यायवाची शब्द है –कल्चर |इससे एग्रीकल्चर और हार्टिकल्चर शब्द बने हैं |प्रकृति में पैदा होने वाली विविध प्रजाति की घास नैसर्गिक है| कालान्तर में मनुष्य ने इनमें से अपने खाने योग्य घास के बीज छांट लिए और ऊँ बीजों की अलग –अलग पहचान करके उन्हें धान ,गेहूं,ज्वार,बाजरा, मक्का,गन्ने की तरह बोने लगा,कृषि करने लगा|यह कृषि कार्य मानव समाज का एग्रीकल्चर है |जब उसने खाने योग्य फलों को पहचान कर उनका बीजारोपण शुरू किया तो हार्टिकल्चर हुआ | जो नैसर्गिक को मानवीय सोच और फलत:उसे हस्तक्षेप से बदलती है|,वह प्रक्रिया और उसका परिणाम संस्कृति है,कल्चर है,एग्रीकल्चरहै,हार्टिकल्चर है |"१

बाबु गुलाबराय एवं श्री गुरुदत्त 'संस्कृति' शब्द का संस्कारों से संबंध स्थापित करते हुए कहते है कि – "संस्कृति शब्द का संबंध संस्कार से है जिसका अर्थ है संशोधन करना,उत्तम बनाना, परिष्कार करना,अंग्रेजी शब्द 'कल्चर' में वही धातु है जो एग्रीकल्चर में है| इसका भी अर्थ पैदा करना या सुधारना है| संस्कार व्यक्ति के भी होते है और जाती के भी | जातीय संस्कारों को ही संस्कार कहते है|"२ इसी प्रकार डॉ.सरोज सिंह अपनी किताब 'अमृतलाल नागर की कथा दृष्टी के समाजशास्त्रीय आयाम' में लिखते है-"संस्कृति का अर्थ संस्कार –सपन्न जीवन है| वह जीवन जीने की कला और विशिष्ठ पद्धति है| मानव जीवन के इच्छा,ज्ञान और क्रिया तीन पक्ष हैं जिसे दूसरे शब्दों में हृदय,बुद्धि और व्यवहार कहा जा सकता है|इन तीनों तत्वों का जब पूर्ण सामंजस्य होता है, तब संस्कृति होती है|"३

उपर्यक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संस्कृति की विशेष उपलब्धि जीवन में मूल्यों का समावेश करना है| मानवीय जीवन में इन मूल्यों का समावेश उसके स्वयं के लक्ष्य,उद्देश, हित,भाव व्यवहार, विश्वास,सांस्कृतिक कार्य एवं आचरण आदि के रूपांतरण,अनुकूल एवं नियोजन आदि में परिलक्षित होता है|

"संस्कृति के संबंध में यह प्रस्तावना हो सकती है की संस्कृति का लक्ष्य परम्परागत मूल्यों का संप्रेषण, नूतन मूल्यों का निर्माण एवं उनका मानव जीवन में समायोजन करनेवाली का निर्धारण करना है | यहाँ परम्परा से प्राप्त मूल्यों से अभिप्राय मौखिक सांस्कृतिक परम्परा से है, जिससे कि बहुसख्यंक जनता स्वत: अपनी आवश्कता के अनुसार सांस्कृतिक विचार ग्रहण करती है | सांस्कृतिक परम्परा का यह भाग ग्रन्थ,संगीत, चित्रकला,मूर्तिकला भवननिर्माण कला एवं अन्य ठोस वस्तुगत आकृतियों के माध्यम से साकार रूप प्राप्त करता है"४

भारत की वास्तविक पहचान हमारी संस्कृति से है| हमारी राष्ट्रिय जीवन धारा निरंतर प्रवाहमान है |अनेक नामों से,अनेक विचारधाराएँ हो सकती है, परन्तु हमारे देश की एक संस्कृति है, जो चिंतन जीवन शैली में अभिव्यक्त होती है| भारतीय संस्कृति का कलेवर अत्यंत सर्वव्यापी और समन्वयशील है, इसमें समय-समय पर कितनी ही संस्कृतियाँ प्रत्यक्ष या परोक्षत: अंतर्भूत होती चली गयीं | इसी समन्वय के कारण यह विशिष्ठ और महत्वपूर्ण हैं | शक,हुन, मुग़ल, अंग्रेज आदि आने और भारतीय संस्कृति में समाहित हो जाने पर भी भारतीय संस्कृति के मूलाधार में परिवर्तन नहीं आया, अपितु यह उनको उनकी संस्कृति को अपने अनुकूल ढालती चली गयी |हमारी संस्कृति की सर्वसमाहितकारी प्रवृति को ध्यान में रखकर इसे सामाजिक संस्कृति की संज्ञां दी गयी है|

हमारा साहित्य भले वो किसी भी भाषा में हों उसमें मूल्यों के दर्शन होते है|साहित्य और मूल्यों का अटूट रिश्ता है| साहित्य में प्राचीन काल से ही मूल्यों का विविरण हम देखते है| मनुष्य ने समाज में रहने और जीवन जीने के लिए कुछ जीवन मूल्य विकसित किए है जो हमें एक दायरा प्रदान करते हैं और मानव में चिंतन शक्ति और बौधिक क्षमता को बढ़ाते है |

साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है| उसी कारण समाज में मूल्यों की जो स्थितियां हैं वहीँ हम साहित्य में देखते है | भारतीय साहित्य के हर विधा में अपनी-अपनी शैली के अनुसार मूल्यों को प्रतिष्ठत किया गया है| समय की आवश्यकता के अनुसार इन मूल्यों में परिवर्तन दिखाई देता है| भारतीय संस्कृति एक विचार अथवा जीवन मूल्य है जिनको जीवन में अपनाकर जीवन के विकास को प्राप्त किया जा सकता है|भारतीय संस्कृति का उद्देश मनुष्य का सामूहिक विकास है उसमें वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वे भवन्तु सुखिन:के भाव सर्वत्र विद्यमान है|

सहायक ग्रन्थ सूची

1. मुस्लिम भक्त कवियों का सांस्कृतिक समन्वय - सं.डॉ.सुरेश आचार्य पृ- ०९

सत्येन्द्र प्रकाशन, ३० पुराना अल्लापुर ,इलाहबाद -२११००६
2. आंचलिक उपन्यास: सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ - डॉ. विमल शंकर नागर पृ-६-७
पेरणा प्रकाशन,३ खालसा,बड़े डाकघर के पीछे मुरादाबाद -२४४००१
व्दितीय संस्करण -१९८६
3. अमृतलाल नागर की कथा दृष्टि के समाजशास्त्रीय आयाम –डॉ.सरोज सिंह पृ-१२१
राका प्रकाशन,इलाहबाद-२ प्रथम संस्करण -२००७
4. आंचलिक उपन्यास: सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ - डॉ. विमल शंकर नागर पृ-१२
5. पेरणा प्रकाशन,३ खालसा,बड़े डाकघर के पीछे मुरादाबाद -२४४००१